National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 26-12-2023, Accepted: 13-01-2024, Published: 31-01-2024
Volume 9, Issue 1, 2024, Page No. 16-18

# भारतीय दर्शन परम्परा में वेदों की सार्वभौमिकता

**सचिन भारद्धाज[1], डॉ. अरूण कुमार साव[2]**
[1] शोधार्थी, योग शिक्षा विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश, भारत
[2] सहायक प्राध्यापक, योग शिक्षा विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश, भारत

**सारांश**
वेद को प्रामाणिक मानने वाले दर्शन को 'आस्तिक' तथा वेद को अप्रमाणिक मानने वाले दर्शन को 'नास्तिक' कहा जाता है। आस्तिक दर्शन छः हैं जिन्हें न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त कहा जाता है। इनके विपरीत चावार्क, बौद्ध और जैन दर्शनों को 'नास्तिक दर्शन' के वर्ग में रखा जाता है। इन दर्शनों में कुछ आपसी विभिन्नता है। किन्तु मतभेदों के बाद भी इन दर्शनों में सर्वनिष्ठता का भाव छिपा है। कुछ समान सिद्धांतों की प्रमाणिकता प्रत्येक दर्शन में उपलब्ध है। इस समानता के कारण प्रत्येक दर्शन का विकास एक ही भूमि भारत में हुआ, ये कहा जा सकता है। एक ही देश में पनपने के कारण इन दर्शनों पर भारतीय प्रतिभा, निष्ठा और संस्कृति की छाप अमिट रूप से पड़ गई है। इस प्रकार भारत के विभिन्न दर्शनों में जो सामानताएँ दिखाई देती हैं, उसे भारतीय दर्शन की विशेषताएँ कहा जाता है।

**मूल शब्दः** दर्शन, भारतीय, वेद, सार्वभौमिकता

भारतीय दर्शन का केंद्र बिंदु मूलतः वेद है, वेद से आरम्भ होकर ब्राह्मण तथा आरण्यकों से होती हुई यह दार्शनिक विचारधारा उपनिषदों में प्रोढ़ और परिपक्व रूप में व्यक्त हुई है। उपनिषदों में ब्रह्म, आत्मा, जीवात्मा, पंचकोशमय देह, जगत, माया, बंधन और मोक्ष जैसे गूढ गंभीर आध्यात्मिक विषयों पर गंभीर रूप से चिंतन हुआ है, कही न कही जीवन के प्रति एक आस्था वेदों में हैं, यही विचार और व्याख्याएँ दर्शन की ठोस आधारभूमि बनाती है। दर्शन को अंग्रेजी में फिलॉसफी (Philosophy) कहते हैं यह शब्द दो ग्रीक शब्दों के मेल से बना है – फिलास = प्रेम या अनुराग तथा सोफिया = विद्या या ज्ञान, अतः इस शब्द का अर्थ है विद्या का प्रेमी या विद्यानुरागी, इस शब्द का प्रचलन सबसे पहले ग्रीक देश में हुआ था । दर्शन शब्द की शास्त्रकारों ने अनेक प्रकार से व्याख्या की है । विभिन्न दर्शनों के प्रणेताओं और अन्य विचारकों ने भी दर्शन शब्द को अपने–अपने ढंग से अर्थ देने का प्रयास किया हैं दर्शन शब्द दृष्टि से निकला है, जिसका अर्थ है देखना या सोचना। एक नयी दृष्टि से देखना और सोचना ही दर्शन का प्रथम चरण है, शब्द व्युत्पति की दृष्टि से दर्शन शब्द का अर्थ है– ''दृश्यते अनेन इति दर्शनम्'' – अर्थात जिसके द्वारा देखा जायें वही दर्शन कहलाता है, अब प्रश्न उठता है कि क्या देखा जाए ? प्रत्येक वस्तु की सत्यता को तात्विक स्वरुप से देखना कि हम कौन है ? हम कहां से आए है, इस सृष्टि, ब्रह्माण्ड का सत्य स्वरूप क्या है ? इसकी उत्पति कहा से और कैसे हुई ? इस सृष्टि की उत्पति का मुख्य प्रयोजन क्या है ? यह चेतन है या अचेतन ? इस संसार में हमारे लिए कौन सा कार्य कर्तव्य है ? जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए कौन उत्तरदायी है ? इन सभी प्रश्नों का समुचित उत्तर देना दर्शन का प्रधान ध्येय है।

संस्कृत साहित्य के व्याकरणशास्त्र के अनुसार से 'वेद' शब्द का अर्थ ज्ञान होता है, हमारे महर्षियों ने अपनी तपस्या के द्वारा जिस 'शाश्वत ज्योति' का शब्द–रूप से साक्षात्कार किया, वही शब्द–राशि 'वेद' है। वेद अनादि हैं और परमात्मा के स्वरूप हैं। महर्षियों द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव होने के कारण इनमें कहीं भी असत्य या अविश्वास के लिये स्थान नहीं है। ये नित्य हैं और मूल में पुरुष–जाति से असम्बद्ध होने के कारण अपौरुषेय कहे जाते हैं, वेद अनादि अपौरुषेय और नित्य हैं तथा उनकी प्रामाणिकता स्वतः सिद्ध है, इस प्रकार का मत आस्तिक सिद्धान्तवाले सभी पौराणिकों एवं सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त के दार्शनिकों का है। न्याय और वैशेषिक के दार्शिनकों ने वेद को अपौरुषेय नहीं माना है, पर वे भी इन्हें ईश्वर द्वारा निर्मित ही मानते हैं। जो वेद को प्रमाण नहीं मानते, वे आस्तिक नहीं कहे जाते। अतः सभी आस्तिक मतवाले वेद को प्रमाण मानने में एकमत हैं, केवल न्याय और वैशेषिक दार्शनिकों की अपौरुषेय मानने की शैली भिन्न है। नास्तिक दार्शनिकों ने वेदों को भिन्न–भिन्न व्यक्तियों द्वारा रचा हुआ ग्रन्थ माना है। चार्वाक मतवालों ने तो वेद को निष्क्रिय लोगों की जीविका का साधन तक कह डाला है। अतः नास्तिक दर्शन वाले वेद को न तो अनादि न अपौरुषेय, और न नित्य ही मानते हैं तथा न इनकी प्रामणिकता में ही विश्वास करते हैं। इसीलिये वे नास्तिक कहलाते हैं। परन्तु आस्तिक दर्शनशास्त्रों ने इस मत का युक्ति, तर्क एवं प्रमाण से पूरा खण्डन किया है।

## अध्ययन क्षेत्र

भारत के दार्शनिक सम्प्रदायों की चर्चा करते समय हम लोगों ने देखा है कि उन्हें साधारणतः आस्तिक और नास्तिक वर्गों में रखा जाता है। वेद को प्रामाणिक मानने वाले दर्शन को 'आस्तिक' तथा वेद को अप्रमाणिक मानने वाले दर्शन को 'नास्तिक' कहा जाता है। आस्तिक दर्शन छः हैं जिन्हें न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त कहा जाता है। इनके विपरीत चावार्क, बौद्ध और जैन दर्शनों को 'नास्तिक दर्शन' के वर्ग में रखा जाता है। इन दर्शनों में कुछ आपसी विभिन्नता है। किन्तु मतभेदों के बाद भी इन दर्शनों में सर्वनिष्ठता का भाव छिपा है। कुछ समान सिद्धांतों की प्रमाणिकता प्रत्येक दर्शन में उपलब्ध है। इस साम्य के कारण प्रत्येक दर्शन का विकास एक ही भूमि भारत में हुआ, ये कहा जा सकता है। एक ही देश में पनपने के कारण इन दर्शनों पर भारतीय प्रतिभा, निष्ठा और संस्कृति की छाप अमिट रूप से पड़ गई है। इस प्रकार भारत के विभिन्न दर्शनों में जो साम्य दिखाई पड़ते हैं, उन्हें "भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएँ" कहा जाता है। ये विशेषताएँ भारतीय विचारधारा के स्वरूप को पूर्णतः प्रकाशित करने में समर्थ हैं। इसीलिये इन विशेषताओं का भारतीय दर्शन में अत्याधिक महत्त्व है।

आस्तिक तथा नास्तिक दर्शन की भिन्नता समझने के लिए यह जानना आवश्यक हैं कि भारतीय विचार परंपरा में वेद का क्या स्थान है। वेद भारत का आदि साहित्य है। वेद के बाद की जो

भारतीय विचार धारा चली वह वेदों से बहुत अधिक प्रभावित हुई है। दार्शनिक विचार धारा पर तो इसका अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। वेद को माननेवाले छह दर्शन षड्दर्शन के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये मीमांसा और वेदांत वैदिक संस्कृति की ही देन हैं। भारतीय दर्शन पर वेद का प्रभाव दो प्रकार से पड़ा है। वेद में दो विचार धाराएँ थीं। एक का संबंध कर्म से था तथा दूसरे का ज्ञान से। ये क्रमशः वैदिक कर्मकांड तथा वैदिक ज्ञानकांड के नाम से विदित हैं। मीमांसा में कर्मकांड का युक्तिपूर्वक प्रतिपादन हुआ है। वेदांत में ज्ञानकांड का पूरा विवेचन किया गया है और इस तरह वेदांत जैसे एक विशाल दर्शन की सृष्टि हुई है। चूंकि मीमांसा और वेदांत में वैदिक विचारों की चर्चा हुई है, इसलिए दोनों को कभी–कभी 'मीमांसा' कहते हैं। भेद के लिए मीमांसा को पूर्व मीमांसा तथा वेदांत को ज्ञानमीमांसा कहते हैं । सांख्य, योग, न्याय तथा वैशेषिक दर्शनों की उत्पत्ति वैदिक विचारों से मुख्यतः जुड़ी हुई नहीं है। इसकी उत्पत्ति लौकिक विचारों से हुई है। किंतु इस कथन से यह नहीं समझना चाहिए कि ये वेद विरोधी थे । इनके सिद्धांतों में तथा वैदिक विचारों में पारस्परिक विरोध नहीं था । वैदिक संस्कृति के विरुद्ध जो प्रतिक्रिएँ हुई थीं उनसे चार्वाक, बौद्ध तथा जैन–दर्शनों की उत्पत्ति हुई। ये वेद को प्रमाण नहीं मानते थे–ये वेद–विरोधी थे। वैदिक दर्शन का आधार वेद व उसका ज्ञान है। ज्ञान वह होता है, जिसमें सत्य निहित होता है तथा जो असत्य से सर्वथा रहित होता है। यदि कोई सिद्धान्त या मान्यता सत्यासत्य मिश्रित हो अथवा असत्य हो तो उसे दर्शन, सत्य सिद्धान्त व मान्यता नहीं कह सकते। वैदिक 6 दर्शनों की प्रत्येक मान्यता तर्क, युक्ति व सत्यासत्य का विश्लेषण कर निर्धारित की गई हैं। आज संसार में अनेक प्रकार की विचारधारायें हैं जो अपने आपको सत्य व तर्क की कसौटी पर कसने का प्रयास करती हैं। मत–मतान्तरों की इन मान्यताओं का यदि वैदिक विचारधारा के आधार पर अध्ययन किया जाये तो इनमें अनेक प्रकार की त्रुटियां, न्यूनतायें व सत्यासत्य का मिश्रण दृष्टिगोचर होता है। संसार में अनेक विचारधारायें हैं जिनमें से कुछ ईश्वर के अस्तित्व को मानती हैं तथा कुछ ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानती। इनके साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि ईश्वर के अस्तित्व को मानने वाली मान्यतायें भी ईश्वर का सत्य व तार्किक स्वरूप प्रस्तुत नहीं करती। जो मत व विचारधारायें ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानतीं, उनका अध्ययन व विश्लेषण करने पर यह तथ्य ज्ञात होता है कि उनमें भी ईश्वर को नकारने के ठोस सिद्धान्त नहीं है। यह लोग इस बात का सन्तोषजनक उत्तर नहीं देते कि यदि ईश्वर नहीं है तो यह जड़–चेतन जगत कैसे अस्तित्व में आया? किसने इस ब्रह्माण्ड में सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, अनेक ग्रह व उपग्रह आदि लोक लोकान्तरों को बनाया है? कौन इस ब्रह्माण्ड के पिण्डों व संसार को नियमों में रखकर चला रहा है? किसने ब्रह्माण्ड के इन सब पिण्डों को बनाकर कैसे उन्हें अलग–अलग आकाश में स्थापित किया, गति दी और ब्रह्माण्ड इसका विगत कई अरब व करोड़ो वर्षों से पालन करता आ रहा है। वैदिक साहित्य वा दर्शन का अध्ययन कर हमें इस ब्रह्माण्ड के अधिकांश रहस्यों का ज्ञान होता है। मनुष्य की बुद्धि की भी अपनी सीमा है। वह सभी विषयों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकती। उसके लिए जितना सम्भव है वह हमारे ऋषि–मुनियों ने जाना और हमें वह अधिकांश ज्ञान वर्तमान में सुलभ है। अतः वैदिक दर्शन व वैदिक सिद्धान्त ही सत्य की कसौटी पर खरे होने के साथ ईश्वर व जीव जगत सहित सृष्टि से जुड़े सभी प्रश्नों का उत्तर देते हैं।

## विश्लेषण

वेदों का मुख्य सिद्धान्त है कि वह ईश्वर व जीवात्मा के अनादि, नित्य, अमर व अविनाशी, अस्तित्व को स्वीकार करता है। दोनों ही पृथक एवं स्वतन्त्र सत्तायें हैं। इन दो चेतन सत्ताओं के अतिरिक्त संसार में प्रकृति नामक एक सूक्ष्म त्रिगुणात्मक जड़ सत्ता भी है। यह प्रकृति भी अनादि, अनुत्पन्न, अविनाशी, परमाणु व अणु में परिवर्तित होने सहित प्रकृति से महतत्व, अहंकार, पांच तन्मात्रायें, पंचमहाभूत, मन, बुद्धि, चित्त आदि अवस्थाओं में परिवर्तित होने वाली हैं। इन तीन सत्ताओं ईश्वर, जीव व प्रकृति का ही संसार में अनादिकाल से अस्तित्व है। ईश्वर में कभी किसी प्रकार का विकार नहीं होता। जीवात्मा जन्म–मरण धर्मा है परन्तु आत्मा में भी कभी कोई विकार नहीं होता। विकार से यहां तात्पर्य है कि आत्मा से कोई अन्य मिलता जुलता व भिन्न नया पदार्थ नहीं बनता जैसा कि प्रकृति में विकार होकर, सूक्ष्म व स्थूल आदि, नाना प्रकार के पदार्थ बनते हैं। वेदों पर आधारित 6 दर्शन है जो अलग–अलग विषयों का विश्लेषण कर उस विषय का तार्किक व विश्लेषणात्मक सत्य ज्ञान प्रदान करते हैं। दर्शनों का यह ज्ञान वेदानुकूल सिद्ध होता है जिससे वेदों का महत्व निर्विवाद है। वेद से अतिरिक्त जितने भी मत व सम्प्रदाय आदि हैं वह अपनी मान्यताओं के सत्यासत्य होने का कभी विश्लेषण नहीं करते। उनके ग्रन्थों में ईश्वर व जीवात्मा का जो स्वरूप है तथा इनके जो कर्म आदि बताये गये हैं वह वैसे ही क्यों हैं, उससे भिन्न क्यों नहीं है? आदि प्रश्नों पर विचार नहीं किया जाता। इस प्रकार वेद एवं भारतीय 6 वैदिक दर्शन योग, सांख्य, वेदान्त, वैशेषिक न्याय और मीमांसा विश्व साहित्य में सर्वोपरि स्थान रखते हैं और उन्नत मानव मस्तिष्क की सर्वोत्तम देन हैं। आधुनिक विज्ञान की आधारशिला बने ब्रह्मांडीय अध्ययन के साथ–साथ शरीर विज्ञान के अध्ययन ये बताने को काफी हैं कि जो कुछ हमारे ऋषि–मुनि अपने ज्ञान से बताकर गए वह न केवल सत्य है अपितु प्रमाणिक भी था और सदैव रहेगा।

हाल ही में ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी के गणित व भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर सर रोगर पेनरोज तथा यूनीवर्सिटी ऑफ एरीजाना के भौतिक वैज्ञानिक Dr- Stuart Hameroff ने 20 साल तक किए अनेक शोधों के बाद निष्कर्ष निकाला कि आत्मा अजर अमर है। इस बारे में इन्होंने कुल 6 शोधपत्र प्रकाशित किए हैं। शोधकर्ता प्रोफेसर सर रोगर पेनरोज तथा Dr- Stuart Hammeroff का कहना है कि मानव मस्तिष्क एक जैविक कंप्यूटर की भांति है। इस जैविक कंप्यूटर का प्रोग्राम चेतना या आत्मा है जो मस्तिष्क के अंदर मौजूद एक क्वांटम कंप्यूटर के जरिये संचालित होती है। क्वांटम कंप्यूटर से तात्पर्य मस्तिष्क की कोशिकाओं में स्थित सूक्ष्म नलिकाओं से है जो प्रोटीन आधारित अणुओं से निर्मित हैं। बड़ी संख्या में ऊर्जा के ये सूक्ष्म स्रोत अणु मिलकर एक क्वाटंम स्टेट तैयार करते हैं जो वास्तव में चेतना या आत्मा है। वैज्ञानिकों के अनुसार, जब व्यक्ति दिमागी रूप से मृत होने लगता है तब ये सूक्ष्म नलिकाएं क्वांटम स्टेट खोने लगती हैं। सूक्ष्म ऊर्जा कण मस्तिष्क की नलिकाओं से निकल ब्रह्मांड में चले जाते हैं। कभी मरता इंसान जिंदा हो उठता है, तब ये कण वापस सूक्ष्म नलिकाओं में लौट जाते हैं। आत्मा चेतन दिमाग की कोशिकाओं में प्रोटीन से बनी नलिकाओं में ऊर्जा के सूक्ष्म स्रोत अणुओं एवं उपअणुओं के रूप में रहती है। सूचनाएं इन्हीं सूक्ष्म कणों में संग्रहित रहती हैं। शोध के अनुसार सूक्ष्म ऊर्जा कणों के ब्रह्मांड में जाने के बावजूद उनमें निहित सूचनाएं नष्ट नहीं होती। क्वाटंम सिद्धांत प्रतिपादित करने वाले वैज्ञानिक मैक्स प्लंक के नाम पर म्यूनिख में प्लंक इंस्टीट्यूट है, वहां के वैज्ञानिक हेंस पीटर टुर ने भी इसकी पुष्टि की है।

## निष्कर्ष

भारतीय वैदिक ज्ञान की सत्ता को स्वीकार न करने वालों के लिये भौतिकी के क्वाटंम सिद्धांत पर आधारित यह शोध एक प्रमाण है क्योंकि वो भारतीय वैदिक ज्ञान परंपरा में हुए ब्रह्मांडीय प्रयोगों को कमतर आंकते रहे और हर तथ्य को अस्वीकार करते रहे। वेदों के ज्ञान से भरे हुए हमारे अतीत को आज फिर से

उसी प्रतिष्ठा के लिए याद करने का समय है। इस सृष्टि में जो कुछ भी इस समय विद्यमान है, जो अब तक हो चुका है और आगे जो भविष्य में होगा, वह सब पुरुष (परमात्मा) ही है। वह पुरुष उस अमरत्व का भी स्वामी है, जो इस दृश्यमान भौतिक जगत के ऊपर है। आज का विज्ञान भी मानता है कि इस दृ श्यमान जगत के अंदर की सच्चाई इसके ऊपर से दिखने वाले रूप से सर्वथा भिन्न है। ऋग्वेद का संदेश आत्मा निरंतरता व अमरता से युक्त है, इसको समझने के लिए यह काफी महत्वपुर्ण प्रमाण है, जिसे अब विज्ञान के द्वारा प्रमाणित किया जा रहा है ।

## संदर्भ सूची


1. राधाकृष्णन, एस. (2010). भारतीय दर्शन. राजपाल एंड सन्स.
2. सिन्हा, प्रो. हरेन्द्र पाल. (2018). भारतीय दर्शन की रूपरेखा. मोतीलाल बनारसीदास.
3. निगम, डॉ. शोभा. (2011). भारतीय दर्शन. मोतीलाल बनारसीदास.
4. विश्वेश्वर, स्वामी. (2010). न्यायकुसुमञ्जली. चौखम्बा विद्या भवन.
5. शर्मा, डॉ. भीष्मदत्त. (2013). ऋग्वेद संहिता सायण टीका. चौखम्बा कृष्णदास एकेडमी.
6. शास्त्री, डॉ. सतवीर. (2011). ऋग्वेद. हिन्दी साहित्य सदन.
7. वर्मा, डॉ. वेदप्रकाश. (2010). दर्शन विवेचना. हिन्दी माध्यम कार्यन्वयन निर्देशालय.
8. Kumar, Shailendra. Choudhury, Sanghamitra. (2021) Decoding the Elements of Human Rights from the Verses of Ancient Védic Literature and Dharmaśāstras. Literature 1:1, pages 24-40.
9. शास्त्री, डॉ. दिनेश चन्द्र. (2016). जीवात्म–सम्बन्धी वैदिक चिन्तन एवं विभिन्न दृष्टिकोण. वैदिक वाग ज्योतिः वोल्युम नं0.–4 ईश्यु नं0 –7
10. .https://www.oxfordbibliographies.com/view/document/obo-9780195399318/obo-9780195399318.0146.xml Access on 10 march 2023
11. https://www.researchgate.net/publication/290514613_Method_of_Research_in_Vedas_Access on 11 march 2023
12. https://www.academia.edu/63931350/Origins_of_Dhy%C4%81na_and_a_survey_of_its_occurrences_in_the_Upani%E1%B9%A3ad_s_an_analysis_in_2021Access on 8 march 2023
13. कम्बोज, डॉ. जियालाल. (2019). अथर्ववेद 10/2/23. शिवालिक प्रकाशन.
14. मन्दिर, श्री शिवप्रकाश. (2018). ऋग्वेद 10/189/2. लक्ष्मी प्रकाशन.
15. गिरी, महेशानन्द. (1975). श्वेताश्वतरोपनिषद् 2/10. वारणासी दक्षिणीमूर्ति मठ.